सुबह की लौ

(झुग्गी-झोंपड़ी के एक घर का बाहर का हिस्सा। नाटक शुरू होने पर रघु अपने घर के आगे चबूतरे पर बैठा है। हथेली पर तंबाकू मलने का अभिनय करता है। रेशमो आती है, उसके कंधे पर बड़ा-सा थैला टंगा है, जैसा कागज बीनने वाली लड़कियों के कंधे पर टंगा रहता है।)

रेशमो : चाचा, राजू कहां है ?

रघु : यहीं कहीं होगा, तुम्हें उससे कोई काम है ?

रेशमो : नहीं, मैंने उसे बताना है कि मुझे आज फिर काम में देर हो गई, मैं पढ़ने नहीं आ सकी।

रघु : अच्छा, मैं उसे बता दूंगा। *(रेशमो जाने के लिए मुड़ती है।)* हां पुत्तर, यह बता तेरी नानी का क्या हाल है ?

रेशमो : चाचा, अच्छा भी है और बुरा भी।

रघु : अच्छा भी है, बुरा भी। ठीक-ठाक बता लड़की।

रेशमो : चाचा, जो उसने मुझे झिड़कना हो तो अच्छी-भली हो जाती है, कहेगी- अरी करमजली, कहां मर गई थी, कब से तेरा रास्ता देख रही हूं। पर अगर उसने मुझसे काम करवाना हो तो उसका हाल बुरा हो जाता है। कहेगी- आज तो मेरी कमर दुखती है, आज रोटी तू पका ले। मुझसे उठा नहीं जाता, पानी का घड़ा भी तू ही भर ले आ। बस, यह हाल है मेरी नानी का। *(जाने के लिए मुड़ती है तो उसका सरदार इन्द्रजीत सिंह से सामना होता है। वह गुंडों की तरह देखता है और नज़रों से उसका पीछा करता है। फिर इन्द्रजीत रघु के पास आता है।)*

इन्द्रजीत : अरे रघु, यह लड़की कौन है ?

रघु : जी, यह अपनी कम्मो की दोहती है।

इन्द्रजीत : *(अपने आप से)* तो ये है रेशमो, जिसका कालू और उसके साथी जिक्र करते हैं। *(फिर रघु से संबोधित होकर)* अच्छा, वो कम्मो, जिसकी झुग्गी आखिर में है ?

रघु : हां जी, पर आपको कैसे पता है ?

इन्द्रजीत : मेरे आदमियों के पास पूरी लिस्ट है। तुम्हें पता है, जिस जमीन पर तुमने डेरा जमा रखा है, वह मेरी है और यहां कौन-कौन रहता है, उस पर निगरानी रखना मेरी जिम्मेदारी है।

रघु : जिम्मेदारी ?

इन्द्रजीत : हां, कल अगर तुम कुछ गलत कर दो तो मैं जमानत देने वाला तो बनूं।

रघु : पर हम क्यों गलत करेंगे ? हम तो जो करते हैं आपकी मर्जी से करते हैं। अगर वह गलत है तो यह आपकी जिम्मेदारी है। यह बताओ, इस वक़्त कैसे तकलीफ की ? क्या संकट आन पड़ा ?

इन्द्रजीत : रघु चौधरी, तेरे होते हुए हमें कोई संकट कैसे हो सकता है। पर एक बात है, काम कोई भी हो, तुम्हें याद करना नहीं भूलते हम।

रघु : यह तो मेहर है जनाब की कि आपका हाथ हमारे सर पर है, नहीं तो कहां हम और कहां आप ?

इन्द्रजीत : तेरे से ज़रूरी काम है।

रघु : आप हुक्म तो करो किस कुएं में छलांग लगानी है।

इन्द्रजीत : कल सुबह चौक वाली दुकानें तोड़नी हैं।

रघु : चौक वाली दुकानें ? वो चट्टों वाली ?

इन्द्रजीत : हां, हाईकोर्ट का ऑर्डर मिल गया है। बस जगह पर कब्जा करना है, परवाह नहीं करनी किसी लाट साहब की।

रघु : पर...

इन्द्रजीत : पर वर कुछ नहीं। जितने आदमी लेकर आएगा, पचास रुपए आदमी के हिसाब से तुम्हें मिलेंगे। तू आगे जो मर्जी दे देना, काम सुबह करना है।

रघु : सुबह क्यों ? अब क्यों नहीं ? अंधेरे में तोड़फोड़ करने में आसानी रहती है।

इन्द्रजीत : नहीं, रात का वक़्त ठीक नहीं है। 11 बजे तक सी.आर.पी. गश्त करती रहती है। कोई और संकट खड़ा हो सकता है। सुबह पांच बजे शुरू कर दो, सात बजे तक काम फतह कर दो।

रघु : पर जनाब पुलिस ?

इन्द्रजीत : पुलिस की फिक्र नहीं, थाने का कोई सिपाही नहीं आएगा, सब काम फिट है। बस उनके आदमियों से चौकन्ना रहना है। अगर अपना भेद पता चल गया तो धोखे से चोट न मार जाएं। वैसे अगर लड़ाई की नौबत आ भी गई तो पीछे मत हटना। अस्पताल और थाने का जो भी खर्च होगा, वो मैं संभाल लूंगा।

रघु : इस बात की फिक्र मत करो मालिक, अपने आदमी तो भूतों जैसे हैं, जिधर टूट पड़ेंगे, कोई साला आगे टिक सकेगा ? आपको कौन सा पता नहीं ? भूले हो क्या ?

इन्द्रजीत : इसीलिए तुम्हें दाहिना बाजू समझता हूं। नहीं तो और बहुत से आवारा घूम रहे हैं शहर में। मेरे साथ आ। जीप में से शराब की पेटी उठा ले। सुबह जितने आदमी हुए, मेरे से पैसे ले जाना। अगर सौ-पचास की और ज़रूरत है तो अब वह भी बता दे।

रघु : जनाब पहले काम, फिर पैसे, आपको तो हमारी आदत का पता है।

इन्द्रजीत : तो फिर चल, आज तुम्हारे लिए लाया भी खास हूं। पर पीना हिसाब से, यह न हो कि सुबह दस बजे तक सोए ही रहो।

रघु : कोई बात ही नहीं।

(उठकर चलने लगता है, दूसरी तरफ से राजू दाखिल होता है)

राजू : क्या कहने बापू के और क्या कहने तेरे इस सरदार के।

रघु : पुत्तर ! तुम कल के छोकरे हमारा मुकाबला कर भी कैसे सकते हो ?

राजू : नहीं कर सकते बापू, नहीं कर सकते। आज तेरा यह सरदार यहां शराब के मटके उड़ेल कर जाएगा, कल तुम सड़कों पर अपने खून से तालाब बनाओगे।

इन्द्रजीत : *(क्रोध से)* रघु, अपने पुत्तर को समझा ले, यह बार-बार तेरे और मेरे दरम्यान आ जाता है। इसने उस वक़्त भी टांग अड़ाई थी, जब मैं मंत्री के आने पर तुम लोगों को ट्रकों में चढ़ाकर उनके स्वागत के लिए ले गया था। उस वक़्त कौन-सी खून के तालाब की बात थी ? बस ज़िंदाबाद-मुर्दाबाद के नारे लगाने थे। उस वक़्त भी तुम्हें पूरे पैसे मिले थे।

रघु : सरदार जी, यह अभी बच्चा है, इसे क्या पता कमाई किस तरह की जाती है। *(राजू से)* अरे लड़के, अगर ज़िंदाबाद-मुर्दाबाद करने से पैसे मिल जाएं तो इसमें हर्ज़ क्या है ?

राजू : हर्ज़ यह है बापू कि यह नीच और कमीना काम है।

रघु : यह नीच काम कैसे है? ये नेता लोग इस ज़िंदाबाद-मुर्दाबाद की कमाई ही खाते हैं।

राजू : बापू, तू यह क्यों भूलता है, जब भी यह सरदार बस्ती में दिखाई देता है अगले एक-दो दिनों में ही बस्ती पर प्रेत की परछाई पड़ जाती है। पुलिस खींचातानी करती है। तुम चोटें खाकर अस्पतालों में चीखें मारते हो। बदले में मिलते हैं कुछ रुपए और मुफ्त की शराब।

रघु : ओए रुपए मिलें, शराब मिले, यह कोई छोटी बात है? और सुन, तू सबको बुला, पैंतीस-पैंतीस रुपए मिलेंगे सबको। दो घण्टों में हम दुकानों का मलबा बनाकर लौट आएंगे।

राजू : मुझे नहीं जाना कहीं भी। गया भी तो सबको कहूंगा कि वे यह मार-धाड़ वाला काम न करें।

रघु : ओए तू महात्मा गांधी की औलाद कहां पैदा हो गया मेरे घर में। तू हमेशा मेरे काम में दखल देता है। छोटा सा था, तेरे साथी बड़े-बड़े बोरे लेकर कचरे के ढेरों से कागज, प्लास्टिक के लिफाफे, कांच के टुकड़े और जो कुछ भी मिलता, इकट्ठा कर लाते। शाम तक चार-पांच रुपए कमा लेते पर बेड़ा गर्क हो तेरे उस मास्टर का, जिसने तुम्हें पढ़ाई में लगा दिया। जैसे पढ़कर तो तुझे डिप्टी लग जाना हो।

राजू : डिप्टी लगा हूं या नहीं, पर जो बात गलत है, वो गलत है।

इन्द्रजीत : अरे मैंने तुम्हारा बाप-बेटे का ड्रामा बहुत देख लिया है। रघु, तेरे इस लड़के के पंख लग आए हैं, इसे नहीं पता कि किसके सामने बातें कर रहा है। तू मेरे साथ आ, शराब की पेटी उठा ले। मुझे और भी बहुत काम हैं।

रघु : आप चलो सरदार जी, मैं किसी आदमी को साथ लेकर आता हूं। पेटी भारी होगी, काम भी तो बहुत भारी है।

इन्द्रजीत : तू आदमी लेकर आ, मैं कम्मो की तरफ होकर आता हूं। बुढ़िया को कोई तकलीफ तो नहीं। इधर तो कीचड़ से मेरी जूती का नाश हो गया।

(यह कहता हुआ वह बाहर चला जाता है।)

राजू : *(जिसने सरदार की आखिरी बात सुन ली है।)* इधर गंदा नाला और उधर कीचड़। बापू तेरे सरदार की जूती कीचड़ में सन गई, कितने अफसोस की बात है।

रघु : ओ नालायक, तू बोलने से बाज नहीं आता। तुझे पता है तू किससे टक्कर ले रहा है ?

राजू : पता है, सरदार इन्द्रजीत सिंह है। यह उस जमीन का मालिक है जिस पर हमारे घर बने हैं, हां अगर हम इस जमीन को जमीन कहें तो।

रघु : अरे तो क्या हुआ अगर गंदे नाले पर है, जमीन तो है। गंदे नाले पर नहीं तो और क्या हमने मॉडल टाउन में रहना है ?

राजू : हां हमारे लिए तो यह गंदा नाला ही मॉडल टाउन है, गंदा नाला, जो सारे शहर की गंदगी ढोता है।

रघु : और सुन, यह इन्द्रजीत कोई मामूली आदमी नहीं है। इसकी सरकार में, दरबार में पहुंच है, इसका बड़ा भाई संसद का मेंबर रह चुका है।

राजू : इसी कारण शहर की बहुत सारी जायज–नाजायज जायदाद अपने कब्जे में कर रखी है।

रघु : अरे यह काम तो सभी तगड़े लोग करते हैं, अदालतों और थानों में इसका दबदबा है, हर जगह इसकी बात सुनी जाती है।

राजू : बात तो इसकी ही सुनी जाती है, तुम्हारी थोड़े ही सुनी जाती है। थाने में दबदबा हर लुच्चे बदमाश का हो सकता है जो महीना पहुंचा दे पर बड़ी बात यह है बापू कि आप उसके खेल का हिस्सा क्यों बनो ?

रघु : पर हमने मुफ्त में थोड़ा ही जाना है ? उसने हर आदमी की कीमत देनी है।

राजू : कीमत देनी है पचास रुपए प्रति आदमी और जिस जायदाद पर कब्जा करना है वह लाखों की होगी।

रघु : लाखों की हो करोड़ों की हो, हमें क्या ? हमारे कौन से बाप की है ? एक का कब्जा हो या दूसरे का हमें क्या मतलब ?

राजू : तुम्हें मतलब इसलिए है कि या तो तुम्हें दूसरी पार्टी के खरीदे हुए आदमियों से लड़ाई करनी पड़ेगी या फिर पुलिस जो दुकानें तोड़ते वक़्त तो नहीं आएगी पर कल बस्ती को खंडहर बना देगी। तुम्हारी वह कुटम्मस होगी कि पन्द्रह दिन तक तुम उठ नहीं सकोगे। पिछली बार भी ऐसा ही हुआ था। बापू, तुम यह समझते क्यों नहीं ?

रघु : समझ जाएं तो क्या फिर हमें रोटी मिल जाएगी ? जिस जमीन पर झुग्गियां बनाकर बैठे हैं, क्या इन्द्रजीत या पुलिस वाले बैठे रहने देंगे ? वे हमें यहां से उजाड़ नहीं देंगे ?

राजू : ऐसे ही उजाड़ देंगे? गड्ढे, टिब्बे समतल तुमने किए तो कहीं यह रहने लायक बनी है, अब ऐसे ही उजाड़ देंगे?

रघु : पर कागजों में यह जमीन इन्द्रजीत की है।

राजू : इन्द्रजीत के पास कहां से आई?

रघु : उसके पुरखे उसके लिए छोड़ गए थे।

राजू : उसके पुरखों के पास कहां से आई थी?

रघु : उन्हें आगे उनके पुरखों से मिली होगी।

राजू : उनके पुरखों को कहां से मिली थी?

रघु : मुझे क्या पता? यह तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती आ रही है।

राजू : हां, यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती आ रही है, यह उसकी पीढ़ियों की दास्तान है और तुम पीढ़ी-दर-पीढ़ी खानाबदोश रहे। एक जगह बसते, वहां से उठा दिए जाते तो किसी दूसरे गंदे नाले के किनारे पर जा बसते। वह जगह थोड़ी संवर जाती तो वे तुम्हें वहां से उठा देते और तुम अगली जगह जा बैठते।

रघु : पर अब तू चाहता क्या है?

राजू : हम अपनी तकदीर बदलने की कोशिश करें और उसकी शुरुआत है कि हम आज सुबह इन्द्रजीत के कहने पर कोई नाजायज काम न करें।

रघु : ठीक है, इस बारे में भी सोचेंगे, पर फिलहाल घर आई लक्ष्मी को लौटाना समझदारी नहीं। वो कह रहा था कि पेटी खास शराब की ला रखी है। *(जाता है, राजू उसे जाते हुए देखता है। बेबसी का प्रभाव दर्शाता है, मानो कह रहा हो इनका कभी कुछ नहीं हो सकता।)*

राजू : *(अपने आप से)* बापू, हमारा दुखांत यही है कि हम सबकुछ समझते हुए भी इस दलदल में से निकलने की कोशिश नहीं करते, बल्कि नीचे ही नीचे धंसते चले जा रहे हैं। *(रेशमो आती है।)*

रेशमो : राजू, तो यह था वो सरदार जिसकी जमीन पर हम बसे हैं?

रघु : हां, यही सरदार है, क्योंकि हम इसकी जमीन पर आबाद हैं, इसलिए यह समझता है उसका हम पर भी कब्जा है, हम उसके गुलाम हैं, वो हमारे साथ जो चाहे भला-बुरा करे, हम नहीं बोल सकते।

रेशमो : मैं जब आई, जितनी देर तक खड़ी रही, मेरी तरफ भी बेशर्मी भरी नजरों से ताकता रहा। उसने कोई नई बात नहीं की। मुझे हर रोज

बाजारों में यह सबकुछ झेलना पड़ता है। दुकानों में बैठे सेठ भी बेशर्मी से देखते हैं और लारें टपकाते हैं।

राजू : अपना ख्याल रखा कर।

रेशमो : अपनी तरफ से तो रखती हूं। अपने बड़े बोरे में दरांती भी रखती हूं। गरीब आदमी को अपनी सुरक्षा खुद करनी पड़ती है। खासतौर पर हम गरीब लड़कियों को... *(वक्फा)* राजू, क्या हम उम्रभर कचरा ही बीनती रहेंगी और बड़े आदमी यूं ही हमें मैली नजरों से ताकते रहेंगे?

राजू : रेशमो, यह बहुत बड़ा सवाल है। मेरे मास्टर जी कहा करते थे कि यह सवाल हर एक गरीब आदमी को अपने आप से पूछना चाहिए और जब वह यह सवाल समझने लायक हो गया तब गरीब आदमी की तकदीर बदलेगी।

रेशमो : तेरे मास्टर जी और क्या कहते थे?

राजू : वे कहते थे कि आज का युग विज्ञान का युग है, आदमी चांद पर पहुंच गया है, उसे अपनी तकदीर बदलने की कोशिश करनी चाहिए। तब ये बातें मुझे पूरी तरह समझ नहीं आती थीं पर अब थोड़ी-थोड़ी समझ आने लगी है।

रेशमो : क्या?

राजू : अगर हम किसी के इशारे पर कुल्हाड़े, गोलियां, सरिए, लाठियां, उठा सकते हैं तो यही कुल्हाड़े, लाठियां हम अपनी तकदीर बदलने के लिए क्यों नहीं उठा सकते? समझदार इसे हथियारबंद इंकलाब कहते हैं।

रेशमो : हथियारबंद इंकलाब?

राजू : हां, हथियारबंद इंकलाब। परिवर्तन लाने के लिए दुश्मन के खिलाफ हथियार उठाना। अब यह सरदार आया था। बापू से कह गया है कि कुछ दुकानें खाली करवानी हैं। वह जानता है कि दुकानों पर जो कब्जा जमाए बैठे हैं वे अपनी दुकानें खाली नहीं करेंगे। वे तोड़नी पड़ेंगी। जोर ज़बरदस्ती से खाली करवानी पड़ेंगी। इसी तरह बड़े लोग जो इस समाज के तमाम साधनों पर कब्जा जमाए बैठे हैं, वे अपने आप गरीबों में थोड़े ही बांट देंगे। वे छीनने पड़ेंगे।

रेशमो : तेरी भी समझ नहीं लगती, अपने आदमियों से झगड़ता है कि वे मारपीट न करें और अब कह रहा है कि इसके बिना गुजारा नहीं।

राजू : अपने हक़ के लिए हथियार उठाना और बात है किसी के इशारे पर हथियार उठाना अलग बात है। पहली बात इंकलाब है और दूसरी बात गुण्डागर्दी और हुल्लड़बाजी है। कुछ आया समझ में?

रेशमो : आ गया बाबा, आ गया।

राजू : क्या?

रेशमो : यही कि तू बस्ती के दूसरे लड़कों से अलग है इसीलिए...

राजू : इसीलिए क्या?

रेशमो : मुझे अच्छा लगता है और अब मुझे यह भी समझ लग गई है कि मुझे अपने बोरे में दरांती क्यों रखनी पड़ती है। चलती हूं- नानी बाट जोह रही होगी, मेरे जाए बिन सोती नहीं है।

राजू : और आज का सबक?

रेशमो : आज का सबक सीख लिया है, इससे बड़ा सबक क्या हो सकता है?

राजू : क्या?

रेशमो : गरीब आदमी को अपनी किस्मत बदलने के लिए हथियार उठाने पड़ेंगे और सुन, जब जरूरत पड़ेगी तो मैं अपनी दरांती को बोरे में पड़ी नहीं रहने दूंगी।

(बाहर निकल जाती है।)

राजू : *(उसे जाते हुए देखकर)*
ये रात के अंधेरे,
जागेंगे लोग, होंगे सवेरे।

रघु : *(बाहर से बड़क)* ओ लड़के, तू अभी तक सोया नहीं?

राजू : बापू आज सोने की नहीं, जागने की रात है?

रघु : क्या मतलब?

राजू : मतलब फिर बताऊंगा, पहले यह बता कि सुबह के लिए आदमी तैयार कर लिए हैं?

रघु : हां, एक-एक बोतल सबको बांट आया हूं और बता आया हूं कि सुबह एक घंटे का काम है। हरेक को तीस-तीस रुपए मिल जाएंगे और मुझे प्रति आदमी बीस रुपए बच जाएंगे। मैं ठहरा उनका चौधरी।

राजू : और सब तैयार हो गए?

रघु : हां, वे तो इंतज़ार कर रहे हैं कि सुबह कब होगी? *(राजू मंच के*

एक तरफ देख रहा है) अरे तू उधर क्या देख रहा है?

राजू : मैं देख रहा हूं कि कब सुबह होगी और हमारी तकदीर बदलेगी।

रघु : मुझे तेरी बातें समझ नहीं आती, पर मैं तुझे खबरदार कर देता हूं कि मेरे किसी काम में दख़ल मत देना। ऐसे मौके बार-बार नहीं आते। *(एक बोतल निकालता है और गिलास में शराब डालता है।)*

राजू : बापू, पेटी में तेरे लिए कितनी बची है?

रघु : बहुत बची है, महीना आराम से निकल जाएगा।

राजू : फिर आगे क्या होगा?

रघु : आगे की आगे देखेंगे। न हम मर चले हैं और न सरदार। और सुन, वह रेशमो के लिए कह गया है कि कागज बीनना बंद कर दे। वह उसे किसी घर में काम दिलवा देगा, नहीं तो अपने घर में ही रख लेगा। वह हमारा अन्नदाता है।

राजू : हां बापू, बड़ा अन्नदाता है, उसे कौन नहीं जानता? *(राजू जाता है, रघु गिलास में और शराब डालता है और पीते-पीते सुधबुध खो बैठता है।)*

रघु : यह अपना लड़का भी बेवकूफ है, कहता है, बापू यह काम नहीं करना, अगर यह काम नहीं करना तो और क्या करना है? अपनी कोई मिलें चलती है? खेतों में ट्रैक्टर चलते हैं? कहता है, नया समाज बनेगा- भला कैसे बनेगा?...कहता है, बन सकता है, अगर गरीब लोग अपनी सरकार बना लें। कैसे बना लेंगे... सरकार बनती है वोटों से... वोटें रघु टपरीवास को नहीं मिलती, सरदार इन्द्रजीत सिंह को मिलती हैं, जिसके पास जमीनें हैं... पैसा है... अरे रघु, तू ये बातें मत सोच... आज ये तेरे पास है, बस पी। *(गिलास में शराब डालता है)* पी और सो जा। गरीब लोग सोए ही रहें तो अच्छा है... उन्होंने जागकर क्या लेना है... सो जा। (सो जाता है *(वक्फा)* फिर हड़बड़ाकर उठता है, राजू की आवाज़ गूंज रही है।)

राजू : बापू, कभी सोचा है, जिनके लिए लड़ने जा रहा है उनके तबेले भी हमारे घरों से अच्छे होंगे। हमारे पास बिजली नहीं, पानी नहीं, हर तरफ कीचड़, मच्छर, गंदगी... यहां कोई अस्पताल है? कोई स्कूल नजदीक है? कभी उन्होंने चाहा है कि हमारे बच्चे भी उनके बच्चों की तरह स्कूल में पढ़ें? अगर हमारे बच्चे पढ़ने लगे तो सोचने भी लगेंगे। फिर उनके लिए लाठियां सरिए उठाकर दुकानें तोड़ने कौन

जाएगा, कौन जाएगा?

रघु : कोई नहीं जाएगा। कोई नहीं जाएगा। मैं भी नहीं जाऊंगा।

(इन्द्रजीत आता है।)

इन्द्रजीत : ओए रघु, तू यहां सोया पड़ा है? अब तो सुबह हो गई है।

रघु : *(हड़बड़ाकर उठता हुआ)* सुबह हो गई है?

इन्द्रजीत : दुकानें तेरा बाप तोड़ने जाएगा?

रघु : सरदार जी, मेरे बाप तक मत जाओ, मेरा लड़का अब पढ़ गया है, वह समझदार हो गया है, भला हम गेंतियां, सरिए उठाकर क्यों दुकानें तोड़ने जाएं, क्यों जाएं?

इन्द्रजीत : हमारी बिल्ली, हमें ही म्याऊं। हमारी शराब पीकर हमें ही आंखें दिखाता है? अगर तुझे घर से बेघर नहीं कर दिया तो मेरा नाम भी सरदार इन्द्रजीत सिंह नहीं।

रघु : अरे कर देना घर से बेघर। पहले हम कौन सा महलों में बैठे हैं, हम किसी और गंदे नाल के किनारे झुग्गी बना लेंगे।

(राजू आता है।)

रेशमो : हां राजू, एक दिन तो यह जंग लड़नी ही पड़ेगी।

इन्द्रजीत : रेशमो, तू यहां?

रेशमो : क्यों मुझे हां नहीं होना चाहिए था? तूने सोचा बस्ती के लोग दुकानें तोड़ने गए होंगे। तूने अपने गुंडों से कहा कि रेशमो को उठा लाओ, पर तुम्हें पता नहीं था कि कागज बीनने वाली रेशमो अपने बोरे में दरांती भी रखती है।

(दरांती ऊपर उठाती है, इन्द्रजीत भागने की मुद्रा में है।)

पर्दे के पीछे से आवाज़ : ये रात के अंधेरे, जागेंगे लोग, होंगे सवेरे।